जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
संस्कृत –विभाग

बी.ए. प्रथम वर्ष 2019–2020
संस्कृत

नोटः– इस परीक्षा में दो प्रश्न–पत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्न–पत्र तीन घण्टे की अवधि तथा 100 अंकों का होगा। **प्रश्न–पत्र का निर्माण संस्कृत भाषा में होगा,** किन्तु विशेष निर्देश के अभाव में प्रश्न–पत्र का उत्तर हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में दिया जा सकता है।

प्रथम प्रश्न–पत्र
काव्य, कथा–साहित्य एवं छन्द

पाठ्यक्रम :–

इकाई 1 – कुमारसंभवम् (पञ्चम सर्ग) 1–60 श्लोक पर्यन्त कालिदास

इकाई 2 – रघुवंशम् (प्रथम सर्ग)1–60 श्लोक पर्यन्त कालिदास

इकाई 3 – कुमारसम्भव (पञ्चमसर्ग)61–86 तथा रघुवंशम् (पथमसर्ग) 61–95श्लोकपर्यन्त

इकाई 4 – पञ्चतन्त्रम् (अपरीक्षितकारकम्)विष्णु शर्मा

इकाई 5 – निम्नलिखित निर्धारित छन्दों के लक्षण एवं उदाहरणविषयक प्रश्न–
आर्या, अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ, द्रुतविलम्बित, भुजंगप्रयातम्, वसन्ततिलका, मालिनी, हरिणी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडितम्, स्रग्धरा।

प्रश्न–पत्र का निर्माण निम्नानुसार होगा –

खण्ड 'अ' – 20 अंक

1. इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. सभी प्रश्नों का उत्तर **संस्कृत** में देना होगा।
3. प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न पूछे जाएँगे।
4. प्रश्नों के उत्तर की अधिकतम सीमा 30 शब्द होगी।

खण्ड 'ब' – 35 अंक

1. प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न पूछे जाएँगे।
2. प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य है, इस प्रकार कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
3. प्रश्नों के उत्तर की अधिकतम सीमा 250 शब्द होगी।

खण्ड 'स' – 45 अंक

1. प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न पूछा जाएगा।
2. कुल पाँच प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से परीक्षार्थी को तीन प्रश्नों का उत्तर देना है।
3. प्रश्न के उत्तर की अधिकतम सीमा 500 शब्द होगी।

सहायक पुस्तकें

पंचतन्त्रम् : व्याख्याकार – श्रीश्यामाचरण पाण्डेय, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी

कुमारसम्भवम् : कालिदास, व्याख्याकार–सूर्यकान्त, साहित्य अकादमी, दिल्ली

रघुवंशम् : कालिदास (संजीवनी टीका सहित) सम्पादक, जी.आर. नन्दार्गीकर मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

छन्द : प्रकाश : पं. शिवदत्त मिश्र

छन्द : प्रवेशिका (प्रभा हिन्दी टीकोपेता), चौखम्बा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

छन्द : कौमुदी : नारायण शास्त्री खिस्ते, चौखम्बा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

कालिदास परिशीलन : डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, संस्कृत परिषद्, सागर, 1987

संस्कृत सुकवि समीक्षा : उपाध्याय बलदेव

Functional Sanskrit; Its Communicative Aspect, Dr. Narendra, Sanskrit Karyalaya, Sri Aurobindo Ashram, Pondichery

द्वितीय प्रश्न–पत्र
नाटक, नाट्यशास्त्र एवं व्याकरण

नोटः **प्रश्न–पत्र का निर्माण संस्कृत भाषा में होगा,** किन्तु विशेष निर्देश के अभाव में प्रश्न–पत्र का उत्तर हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में दिया जा सकता है। प्रश्न–पत्र तीन घण्टे की अवधि तथा 100 अंकों का होगा।

पाठ्यक्रम

इकाई 1 – स्वप्नवासवदत्तम् – भास

इकाई 2 – नाट्यशास्त्र (प्रथम अध्याय) – भरत

इकाई 3 – नाट्यशास्त्र (द्वितीय अध्याय) – भरत

इकाई 4 – लघसिद्धान्त कौमुदी के संज्ञा प्रकरण एवं निम्नलिखित कृत्–प्रत्ययों से सम्बन्धित प्रश्न
तव्यत्, अनीयर्– तव्यत्तव्यानीयरः
यत् – अचो यत्, ईद्यति, पोरदुपधात्
क्यप् – एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्, ह्रस्वस्य पिति कृति तुँक्, शास इदङ्हलोः
ण्यत् – ऋहलोर्ण्यत्
शतृ, शानच् – लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे, आने मुँक्
क्त, क्तवतु – क्तक्तवतूँ निष्ठा, रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः
क्त्वा – समानकर्तृकयोः पूर्वकाले
ल्यप् – समासेऽनञ् पूर्वे क्त्वो ल्यप्
तुमुन् – तुमुण्ण्वुलौ क्रियायाँ क्रियार्थायाम्

इकाई 5 – (क) निर्धारित कारक प्रकरण से सूत्र की व्याख्या एवं उदाहरणविषयक प्रश्न –
कारक प्रकरण के सूत्र –
प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा, सम्बोधने च, कर्तुरीप्सिततमं कर्म, कर्मणि द्वितीया, अकथितञ्च, अधिशीङ्स्थासां कर्म, अभिनिविशश्च, उपान्वध्याङ्वसः, अन्तराऽन्तरेण युक्ते, कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे, उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु। द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते।। अभितः परितः समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि, स्वतन्त्रः कर्ता, साधकतमं करणम्, कर्तृकरणयोस्तृतीया, अपवर्गे तृतीया, सहयुक्तेऽप्रधाने, येनाङ्गविकारः, इत्थम्भूतलक्षणे, हेतौ, कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्, चतुर्थी सम्प्रदाने, रुच्यर्थानां प्रीयमाणः, धारेरुत्तमर्णः, स्पृहेरीप्सितः, क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः, नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च, ध्रुवमपायेऽपादानम्, अपादाने पंचमी, भीत्रार्थानां भयहेतुः, जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्, जनिकर्तुःप्रकृतिः, भुवः प्रभवः, ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च, षष्ठी शेषे, पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्, षष्ठी हेतुप्रयोगे, अधीगर्थदयेशां कर्मणि, कृत्यानां कर्तरि वा, तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम्, आधारोऽधिकरणम्, सप्तम्यधिकरणे च, यस्य च भावेन भावलक्षणम्, षष्ठी चानादरे, यतश्च निर्धारणम्, पंचमी विभक्ते
(ख) शब्दरूप – राम, हरि, गुरु, पितृ, रमा, नदी, मति, वधू, अस्मद्, युष्मद्, तद्, इदम्, एक, द्वि, त्रि
उक्त निर्धारित शब्दों की विभक्ति में रूप सम्बन्धी प्रश्न
(ग) धातुरूप – भू, वद्, अस्, मुच्, कृ, कथ्, नम्, गम्, युध्, नश्
उक्त निर्धारित धातुओं के लट्, लृट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् में रूप सम्बन्धी प्रश्न

प्रश्न पत्र का निर्माण निम्नानुसार होगा –

खण्ड 'अ' **– 20 अंक**

1. इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. सभी प्रश्नों का उत्तर **संस्कृत** में देना होगा।
3. प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न पूछे जाएँगे।
4. प्रश्नों के उत्तर की अधिकतम सीमा 30 शब्द होगी।

खण्ड 'ब' **– 35 अंक**

1. प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न पूछे जाएँगे।
2. प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य है इस प्रकार कुल पाँच प्रश्न करने हैं।
3. प्रश्नों के उत्तर की अधिकतम सीमा 250 शब्द होगी।

खण्ड 'स' — **45 अंक**

1. प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न पूछा जाएगा।
2. कुल पाँच प्रश्न होंगे जिनमें से परीक्षार्थी को तीन प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है।
3. प्रश्न के उत्तर की अधिकतम सीमा 500 शब्द होगी।

सहायक पुस्तकें

स्वप्नवासवदत्तम् : जयपाल विद्यालंकार, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली 1972
नाट्यशास्त्र : (प्रदीप हिन्दी टीकोपेत), चौखम्बा पब्लिकेशन्स, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली
लघु सिद्धान्त कौमुदीः शारदारंजन रे, 1954
नवनीत संस्कृत शब्द धातु–रूपावली : राजाराम शास्त्री नाटेकर, नवनीत प्रकाशन मुम्बई, 1990
रूप चन्द्रिका : रामचन्द्र झा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज
वृहद् अनुवाद चन्द्रिका : चक्रधर हंस नौटियाल
संस्कृत व्याकरण : श्री निवास शास्त्री